कलाकार मंच पर

चाची / रामखेलावन	चन्द्रभाष सिंह
बाँदावाली	माधुरी सिंह
सुमन	सुनीता सिंह
तारा	अंजली सिंह
चंदा	चन्द्रकला
ग्रमीण महिलाएं	अनामिका शुक्ला, चारू शुक्ला, नेहा खान, अन्नी श्रीवास्तव, पीहू, प्राची बरनवाल, कविता दोहरे
हरिया / कम्पाउण्डर	तारा उप्रेती
झगड़ू	मोहन सोनी
पोड़ई	इकबाल
पोकई	आनन्द कुमार
लोटन	रमन
डॉ० आल राइट	आनन्द त्रिवेदी
प्रधान	सुमित प्रकाश
हरिओम	योगेश वर्मा
सूत्रधार	रूची सिंह, रजत, कविता
लल्लन	पंकज श्रीवास्तव
रामसरन	गिरीराज शर्मा
जगन	रंजीव चौबे
गजाधर	सुरमीत कुमार
मजनू	नेवर भार्गव
लैला	मनीष
ग्रामीण	हरिओम सिंह
बाल कलाकार	सृष्टि वर्मा, कौशिकी कपूर, पृणाली सिंह

कलाकार मंच परे

प्रकाश	तमाल बोस
प्रकाश सहायक	मोहन सेनी, सुरजीत कुमार
मंच निर्माण	शकील
वस्त्रविन्यास	माधुरी सिंह, अनामिका शुक्ला
मुख सज्जा	सचिन जयसवाल
पूर्वाभ्यास प्रभारी	गिरीराज शर्मा
संगीत	शुभम श्रीवास्तव
स्वर	रंजीत चौबे, चन्द्रकला, अनामिका शुक्ला, माधुरी सिंह, चारू शुक्ला
हारमोनियम	राजू शर्मा
ढोलक	शशांक तिवारी
प्रचार–प्रसार	भरत कुमार
प्रस्तुति नियंत्रक	नैनिका रमोला
सह निर्देशक	माधुरी सिंह, कीर्ति
प्रस्तुति	संस्था "विजय बेला एक कदम खुशियों की ओर"
लेखक	जयवर्धन
आयोजक	पिक्सल फिल्मस
निर्माता	इंजी० ओमप्रकाश शर्मा
परिकल्पना एवं निर्देशन	चन्द्रभाष सिंह

Pixel Films
GAAZA·BAAZA·NAAZA

Present's

किस्सा मौजपुर का

लेखक : जयवर्धन

परिकल्पना एवं निर्देशन
चन्द्रभाष सिंह

13 दिसम्बर 2018, सायं 6:30 बजे

स्थान : राय उमानाथ बली प्रेक्षागृह, कैसरबाग, लखनऊ

Radio Partner : Fever 104 FM

Creation By :

सम्पर्क :
7524004990, 7860848563, 9415090090, 8931809146
7524004985, 6388950743, 8299838016

पिक्सल फिल्मस

पिक्सल फिल्मस का मुख्य उद्देश्य लखनऊ रंगमंच को ऊचाई देने के साथ–साथ भारतीय संस्कृति व सामाजिक कुप्रथाओं को रंगमंच के माध्यम से आम जनमानस तक लाना है। पिक्सल फिल्मस की ये तीसरी प्रस्तुति है। इससे पहले नाटक ''कंसा'' के दो सफल आयोजन करा चुकी है।

अधिकतर देखा गया है कि लखनऊ में नाटकों को टिकट से कम ही लोग देखते है और वो भी जब प्रस्तुति लखनऊ के कलाकारों द्वारा तैयार की गयी हो, इस प्रथा को भी समाप्त करने का प्रयास किया जायेगा। आखिर जब हम सिनेमा, किताबे, अखबार व पार्को के लिए रूपये खर्च कर सकते है तो नाटकों के लिए क्यों नही, जिसके लिए कलाकार रात–दिन मेहनत करके आपको अपनी प्रस्तुति दिखाते है। पिक्सल फिल्मस आपके सामने एक से बढ़कर एक बेहतर प्रस्तुतियां लेकर आता रहेगा और आप सभी दशर्कों से अनुरोध करता है कि टिकट लेकर नाटक देखे जिससे कलाकारों को प्रोत्साहन मिल सके।

इंजी0 ओम प्रकाश शर्मा

WWW.Pixelfilms.org

कथासार

नाटक 'किस्सा मौजपुर का' में समाज में महिलाओं के प्रति उदासीनता को दर्शाया गया है। जब से विज्ञान के माध्यम से गर्भ की जांच होनी शुरू हो गयी तब से हर कोई लड़का ही चाहता है, हम कितनी भी तरक्की क्यों न कर ले, लड़के की चाहत और मानसिकता ज्यों की त्यों बनी हुई है। लड़का वंश बढ़ाता है, लड़का घर का चिराग होता है, लड़कियां पराया धन होती है वगैरह–वगैरह। अगर ऐसा ही होता रहा तो वह दिन दूर नहीं जब लड़कियों की संख्या न के बराबर हो जाएगी ऐसे में लड़कों की शादी के लिए लड़कियां कहां से आएंगी। जब लड़कियां ही नहीं होंगी तो पुरूष का भी जन्म नहीं होगा। अतः इस धरा से मानव का अस्तित्व ही खत्म हो जाएगा। हमारा छोटा सा स्वार्थ कहीं विकराल समस्या का रूप न धारण कर ले, इसी गम्भीर समस्या को हास्यव्यंग्य के माध्यम से प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया। नाटक में गाँव मौजपुर को दर्शाने के लिए चौपाल, अखाड़ा, नौटंकी और गायक मंडली का सहारा लिया गया है। नाटक की शुरूवात खुशहाली से प्रारम्भ होती है। कुछ दिन बाद गाँव में क्लीनिक खुल जाती है फिर शुरू होता है माँ के पेट में लिंग की जाँच एवं गर्भ में लड़की होने पर अबॉशन। देखते ही देखते मौजपुर से समस्त नारी विलुप्त हो जाती है। फिर शुरू होती समस्या कि अब गॉव के लड़को का विवाह कैसे किया जाए। मौजपुर गॉव में जो भी लड़का देखने आता है उसे पता चलता है इस गॉव में महिलायें ही नहीं है तो वह उल्टे पॉव लौट जाता है। मौजपुर के लिए यह समस्या इतनी विकट हो जाती है, तब जाकर मालुम पड़ता है कि समाज एवं मानव प्रजाति के लिए महिलायें कितनी महत्वपूर्ण हैं।

हमे इस ज़मीं पे आने तो दो,
खुले आसमां में चहचहाने तो दो,
खुशियों से भर देगें जहाँ,
पहले इस ज़मी पे आने तो दो।

चन्द्रभाष सिंह, नाट्य निर्देशक